वीरांगना

ई–पत्रिका, मार्च 2024

महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

NAAC ACCREDITED "A" GRADE

संपादक मंडल

संरक्षक

डॉ. पुरुषोत्तम गौतम

प्राचार्य

प्रधान संपादक

डॉ. श्रद्धा सक्सेना

हिन्दी विभाग

डॉ. आर. के. वैद्य

सैन्य विज्ञान विभाग

डॉ. नीरज कुमार झा

अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग

डॉ. अंजुलि शर्मा

विधि विभाग

डॉ. सीमा चंदेल

भूगोल विभाग

डॉ. साधना अग्रवाल

अंग्रेजी विभाग

अनुक्रम

Contents

- प्राचार्य की कलम से
- संपादकीय
- शहर
- विकसित भारतए 2047
- फूटा घड़ा
- मैं हसदेव बोल रहा हूँ
- राम की छवि
- राष्ट्रवाद
- विकसित भारत
- संपादक मंडल
- कल बनाम आज
- मै हिन्दी हूँ
- धन्यम् भारत वर्ष
- स्मरेम निजगौरवम्
- एनसीसी शिविर
- पोयम
- नारी का अस्तित्व
- सुर्ख़ियों में महाविद्यालय

A VISIONARY DREAM: VIKSIT BHARAT 2047

मुखपृष्ठ चित्रांकन: दिव्यांशी कुशवाह एम.ए. उत्तरार्द्ध, चित्रकला

प्राचार्य की कलम से...

वर्तमान समय भारत के लिये अमृत काल है। वर्ष 2022-2047 तक उन्नति के लिये नया आकाश खुलेगा। इसका सदुपयोग किया जाना चाहिये। युवापीढ़ी का यह पुनीत दायित्व है कि इस समय, वे अपनी प्रतिभा और सामार्थ्य में वृद्धि कर, स्वयं के तथा राष्ट्र के निर्माण में संलग्न हों। इसके लिये अनुशासित जीवन, शालीनता एंव विनम्रता जैसे गुणों को अपना कर, वे अपने चरित्र को श्रेष्ठ बना सकते हैं। समूचा देश राम की शक्तियों को, उनकी दिव्यता को अनुभूत कर रहा है। यह समय है जब हम भी यह प्रेरणा लें कि जीवन में शक्ति, शील और सौंदर्य का समन्वय कर, अपने जीवन को कैसे अनुकरणीय बना सकते हैं।

अत्यंत हर्ष का विषय है कि यह महाविद्यालय प्रतिवर्ष अपनी वार्षिक पत्रिका वीरांगना के माध्यम से विद्यार्थियों की प्रतिभा निखारने का कार्य करता है। प्रतिभावान छात्र-छात्राएँ और विद्वान प्राध्यापक, महाविद्यालय की छवि निर्मित करते हैं। जिन विद्यार्थियों ने अपने लेखन-कौशल से इस पत्रिका में स्थान पाया है- वे बधाई के पात्र हैं। ई- पत्रिका का यह संस्करण शिक्षकों, छात्रों की लेखन-प्रतिभा को निखारने में मदद करेगा। साथ ही समसामयिक गतिविधियों के दर्पण का कार्य करेगा। अन्य विद्यार्थी भी अपनी लेखन-क्षमता विकसित करके, प्रतिभा के विभिन्न आयामों में प्राप्त उपलब्धियों को प्रकाशित कर, प्रशंसा और सम्मान के अधिकारी बन सकते हैं।

महाविलय की 132 वर्षों की सुदीर्घ परम्परा का परिचय इस पत्रिका में प्राप्त होता है। महाविद्यालय के जिन पूर्व छात्रों ने, गरिमामयी आचरण से समूचे देश में महाविद्यालय की छवि बनायी है, शीर्ष पदों पर विराजित होकर महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया है, उनसे प्रेरणा लेकर, आज के विद्यार्थी इस विरासत को अक्षुण्ण रखेंगे- ऐसा मेरा विश्वास है।

सभी शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

डॉ. पुरुषोत्तम गौतम

“युवापीढ़ी का यह पुनीत दायित्व है कि इस समय, वे अपनी प्रतिभा और सामार्थ्य में वृद्धि कर, स्वयं के तथा राष्ट्र के निर्माण में संलग्न हों।“

"विकसित भारत की लक्ष्य - प्राप्ति चुनौतीपूर्ण रास्तों से ही सम्भव होगी।
हमारा पुरुषार्थ व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता से राष्ट्रहित तक विस्तृत हो-यह भाव सदैव हमारे दृष्टि-पथ में रहना चाहिये।"

संपादकीय

वर्तमान समय सभी भारतवासियों के लिये गर्व, उल्लास और प्रसन्नता का है। सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह, अनेक क्षेत्रों में हम सबको उत्कर्ष की ओर बढ़ने में सहयोग कर रहा है। प्रतिभावानों को, अपने विकास के लिये, अनेक अवसर प्राप्त हैं। विकास की इस वेला में युवापीढ़ी को भी शुभ संकल्पों के साथ देश के विकास में अपनी भूमिका निभानी है।

शिक्षा का अर्थ, समाज का उत्थान करना है। सबके हित का भाव तथा जीवन का लक्ष्य 'सर्व जन हिताय' हमें श्रेष्ठ इंसान बनाता है। विकसित भारत की लक्ष्य प्राप्ति चुनौतीपूर्ण रास्तों से ही सम्भव होगी। हमारा पुरुषार्थ व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता से राष्ट्रहित तक विस्तृत हो–यह भाव सदैव हमारे दृष्टि–पथ में रहना चाहिये। भारत को हर क्षेत्र में शीर्ष तक पहुँचाने के लिये हम सबको अपने दायित्वों का निर्वहन दृढ संकल्प के साथ करना है।

'वीरांगना' का यह अंक ऐसी ही सकारात्मक सोच, शुभ संकल्पों तथा उनकी कल्पना की अनुकृति को आप तक पहुँचा रहा है। सभी छात्र बधाई के पात्र हैं। यह अंक मेरे सभी सहयोगियों के अथक परिश्रम का प्रतिफल है। मैं हृदय तल से उनके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। आदरणीय प्राचार्य महोदय की प्रेरणा तथा मार्गदर्शन, 'वीरांगना' के रूप – निर्धारण का सम्बल रहा है। पत्रिका समिति की ओर से, मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

भारत की गौरवपूर्ण वैश्विक छवि, युवाओं की प्रतिभा और राष्ट्रभक्ति का ही सत्परिणाम है। माँ सरस्वती की कृपा वृष्टि यूँ ही निरंतर होती रहे। । युवा वर्ग माँ भारती का सम्मान सदैव बढ़ाता रहे – इसी शुभेच्छा के साथ–

डॉ. श्रद्धा सक्सेना

शहर

–अखिलेश अहिरवार
एम. ए. (हिन्दी चतुर्थ सेमेस्टर)

ये शहर की अजनबी दुनिया
हैं खड़े भीड़ में,
फिर भी अकेले हैं।
बहुत मिले राह में,
याद भी कुछ शख्स हैं,
फिर भी अकेले हैं।
दूर–दूर तक देखते,
सिफ़र ये शहर है,
हैं मेहरूम इस शहर में,
आज भी अकेले हैं।
चलता फिरता अजनबी
है शहर का जीवन
न कोई अपना पास है,
शहर की इस राह में,
आज भी अकेले हैं।

विकसित भारत, 2047

–रोशनी यादव
बी.ए. (तृतीय वर्ष)

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 11 दिसम्बर 2013 को भारत के युवाओं के लिये विकसित भारत / 2047 अभियान की घोषणा की है।

विकसित भारत 2047 का उद्देश्य आज़ादी के 100 वें वर्ष यानी, वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है। यह दृष्टिकोण आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और सुशासन सहित विकास के विभिन्न सिद्धांतों को सम्मिलित करता है।

आज के समय में भारत अंतरिक्ष, प्रौद्योगिकी तकनीकी की इत्यादि क्षेत्रों मे अग्रणी भूमिका निभा रहा है । 1991 के आर्थिक संकट का सामना करने से लेकर, दुनिया की 5 वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने तक, भारत ने एक लंबा सफर तय किया है। भारत में अभी अमृतकाल चल रहा है। और अब भारत आने वाले 25–30 वर्षों तक कामकाजी उम्र की आबादी के मामले में अग्रणी बनने जा रहा है। और यह भारत के इतिहास का वह कालखंड है जब देश एक लंबी छलांग लगाने जा रहा है। हमारे आस–पास ऐसे कई देशों का उदाहरण है जिन्होंने एक निर्धारित समय सीमा में इतनी लंबी छलांग लगाई कि विकसित राष्ट्र बन गये । अतः यही सही समय है जब आने वाले 25 वर्षों में भारत को एक विकसित राष्ट्र के रूप मे देखने के इस महत्वकांक्षी लक्ष्य को साकार कर सकना संभव है। भारत को 2047 तक एक विकसित और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने के लिये सरकार कई नीतियाँ लेकर आई है।

भारत पहले से ही कई क्षेत्रों जैसे खेल, प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, रक्षा और कई विदेशी नीतियों मे उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहा है, 2047 में, मैं भारत को हर क्षेत्र में अग्रणी देशों मे से एक के रूप में देखती है। भारत में महिलाएँ सशक्त और आत्मनिर्भर होंगी, हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाएँगी और समाज से पितृसत्तात्मक धारणाएँ खत्म हो जाएँगी।

2047 मे भारत की रीढ़ कही जाने वाली खेती प्रगतिशील होगी और कृषि पद्धिति में आधुनिकरण आयेगा। और भारत एक ऐसा राष्ट्र बनेगा जहाँ कृषि प्रौद्योगिकी के लिये समान रूप से महत्वपूर्ण होगी।

यातायात व्यवस्थित ढंग से संचालित होगा जहाँ लोग न केवल भारी जुर्माने से बचने के लिये बल्कि प्रबंधन में योगदान देने के लिये सभी सड़क और यातायात नियमों का पालन करते होंगे। साथ ही प्रदूषण का स्तर नियंत्रण में और प्रबंधनीय होना चाहिये । इलेक्ट्रीकल या सी एन जी का प्रयोग अधिक होगा, हमारी राष्ट्रीय नीतियाँ पर्यावरण अनुकूल होगी और साथ ही हमारा भारत सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर रहेगा।

आने वाले 25 वर्षों में गरीबी, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार जैसी समस्याएं खत्म हो जाएंगी और किसी भी व्यक्ति को अपनी बुनियादी जीवन–यापन की जरूरते पूरी करने के लिये कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। देश के युवाओं को रोजगार के उचित अवसर प्राप्त होंगे । शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी सुविधायें तकनीकी और प्रौद्योगिकी से परिपूर्ण होने के साथ साथ सभी नागरिको के लिये आसानी से उपलब्ध होंगी जिससे हमारा देश उन्नति के पथ पर तीव्र गति से आगे बढ़ेगा और पूरे विश्व में एक शक्तिशाली और प्रगतिशील राष्ट्र बनेग।

यदि हम सब भारतवासी देश–हित को अपना धर्म समझकर देश की प्रगति एवं उन्नति में सामूहिक रूप से अपना योगदान देते रहेंगे, तो अवश्य ही वर्ष 2047 में भारत को एक विकसित राष्ट्र के रूप में देखने का लक्ष्य साकार होगा।

''वर्ष 2047 में होगा, हमारा भारत विकसित समाज का हर वर्ग बनेगा, सशक्त, समृद्ध और शिक्षित''

मध्यराज्य

महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय ग्वालियर, में 'मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम' का आयोजन हुआ

ग्वालियर। आज दिनांक को महाविद्यालय में शासन के निर्देशानुसार 'मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम' के उपलक्ष में राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों द्वारा एक एन.एस.एस वाटिका का निर्माण महाविद्यालय परिसर में किया गया जिसमें विभिन्न प्रकार के पौधे लगाए गए. कार्यक्रम की शुरुआत महात्मा गांधी की प्रतिमा पर आज के मुख्य अतिथि श्री गौरव सिंह चंदेल (Petty Officer CI 3 MP Naval Unit NCC) द्वारा माल्यार्पण कर की गई. इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य आर. सी गुप्ता जी एवं वरिष्ठ अध्यापकों द्वारा मुख्य अतिथि श्री गौरव सिंह चंदेल का माला पहनाकर एवं राष्ट्रीय सेवा योजना का बेज लगाकर स्वागत किया. मुख्य अतिथि का स्वागत महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा पौधा भेंट करके

किया गया. इस अवसर पर डॉक्टर आर. सी गुप्ता जी ने 'मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम' के महत्व को छात्र छात्राओं को विस्तार से समझाया एवं 'पंच प्रण शपथ' ली इसके साथ ही कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री गौरव सिंह चंदेल ने अपने नौसेना के अनुभवों को छात्र छात्राओं के साथ साझा किया. इस अवसर पर महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ राजेंद्र वैद्य, डॉ नीरज कुमार झा, डॉ सुशील कुमार, डॉक्टर गौतम जी एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी डॉ राजेश गढ़वाल, डॉ नुसरत अली रिजवी, डॉक्टर आनंद मिश्रा एवं बड़ी संख्या में महाविद्यालय के छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

फूटा घड़ा

–सोनू गौड़
एलएल.बी. (तृतीय वर्ष)

बहुत समय पहले की बात है। किसी गाँव में एक किसान रहता था। वह रोज सुबह उठकर गाँव से दूर स्थित झरनों से स्वच्छ पानी लेने जाया करता था। इस काम के लिए यह अपने साथ दो बड़े–बड़े घड़े ले जाता था, जिन्हें वह डंडे में बाँधकर अपने कधों पर दोनों ओर लटका लेता था। उनमें से एक घड़ा कहीं से फूटा हुआ था और दूसरा एकदम सही था। इस वजह से रोज घर पहुँचते पहुँचते किसान के पास डेड़ घड़ा पानी बच पाता था। ऐसा 2 सालों से लगातार चल आ रहा था।

सही घड़े को इस बात का घमंड था कि वो पूरा का पूरा पानी घर पहुँचता है और उसके अंदर कोई कमी नहीं है, वहीं दूसरी तरफ फूटा घड़ा इस बात से शर्मिंदा रहता था कि वह आधा पानी ही घर तक पहुँचा पाता है और किसान की मेहनत बेकार चली जाती है। फूटा घड़ा यह सब सोचकर बहुत परेशान रहने लगा और एक दिन उससे रहा नहीं गया, उसने किसान से कहा में खुद पर शर्मिंदा हूँ और आपसे क्षमा माँगना चाहता हूँ।

क्यों ? किसान ने पूछा तुम किस बात से शर्मिंदा हो? शायद आप नहीं जानते पर मैं एक जगह से फूटा हुआ हूँ और पिछले दो सालों से मुझे जितना पानी घर पहुँचना चाहिए था, बस उसका आधा ही पहुँचा पाता हूँ। मेरे अंदर यह बहुत बड़ी कमी है और इस वजह से आपकी मेहनत बर्बाद होती रही है, फूटे घड़े ने दुखी होते हुए कहा।

किसान को घड़े की बात सुनकर थोड़ा दुख हुआ और वह बोला कोई बात नहीं, मैं चाहता हूँ कि आज लौटते वक्त तुम रास्ते में पड़ने वाले सुंदर फूलों को देखो घड़े ने वैसा ही किया यह रास्ते भर सुंदर फूलों को देखता आया, ऐसा करने से उसकी उदासी कुछ दूर हुई पर घर पहुँचते–पहुँचते ही फिर उसके अंदर से आधा पानी गिर चुका था। वह मायूस हो गया था और किसान से क्षमा माँगने लगा। किसान बोला, शायद तुमने ध्यान नहीं दिया पूरे रास्ते में जितने भी फूल थे वह बस तुम्हारी तरफ ही थे। सही घड़े की तरफ एक भी फूल नहीं था ऐसा इसलिए क्योंकि हमेशा से तुम्हारे अंदर की कमी को जानता था और मैंने उसका लाभ उठाया मैं तुम्हारे तरफ वाले रास्ते पर रंग–बिरंगे फूलों के बीज बो दिए थे, तुम रोज थोड़ा–थोड़ा करके उन्हें सींचते रहे और पूरे रास्ते को इतना खूबसूरत बना दिया। आज तुम्हारी वजह से ही में इन फूलों को भगवान को अर्पित कर पाता हूँ। तुम्हीं सोचो अगर तुम जैसे हो, वैसे नहीं होते, तो भला क्या में यह सब कुछ कर पाता।

दोस्तों हम सभी के अंदर कोई ना कोई कमी होती है पर यही कमियाँ हमें अनोखा बनती हैं उस किसान की तरह हमें भी हर किसी को वह जैसा है वैसे ही स्वीकारना चाहिए और उसकी अच्छाई की तरफ ध्यान देना चाहिए और हम जब ऐसा करेंगे तब फूटा घड़ा भी अच्छी घड़े से मूल्यवान हो जाएगा।

‘‘मैं हसदेव बोल रहा हूँ’’

–चंचल भगत
एम. ए. (प्रथम सेमेस्टर हिन्दी)

सुनो जरा, मैं छत्तीसगढ़ का वन-
प्रदेश हसदेव बोल रहा हूँ।

आशियाँ उन पंछियों का,
जो आज़ाद मुझमें चहकती है।

सीने से टकरा कर मेरी,
कई नदियाँ बहती हैं

उन बहती नदियों में मैंने,
कई अद्भुत जंतु भी तो पाले हैं।

पेड़, पौधे, औषधि व गुलशन,
मैंने इसी ज़मीं से निकाले हैं।

जब शुद्ध हवा की तुम्हें निहायत ही दरकार है,
फिर कैसे सोचा तुमनें,

मुझमें बसा यह जंगल बेकार है......?
मैं बेजुबां हूँ, बचा लो मुझे,

मैं अपनी जुबां खोल रहा हूँ।
सुनो जरा, मैं हसदेव बोल रहा हूँ।

जानवरों को बेघर कर,
पंछियाँ यूँ दर-बदर ।

मेरे दरख्तों को उखाड़ कर,
बनाया मुझे खदानों का घर,

अब कितना कुदरत से खेलोगे.....?
आएगा कहर भूलो मत,

फिर नजाने क्या-क्या झेलोगे ।
थम जाओ, मैं तुम्हारे ही भविष्य का चिट्ठा खोल रहा हूँ।

मानो मेरी बात, मैं हसदेव बोल रहा हूँ,
मैं हसदेव बोल रहा हूँ।

राम की छवि

–सचिन सिंह गुर्जर
एम.ए. हिन्दी (प्रथम वर्ष)

जिसने हर्षाए तन, मन सब, वो छवि राम की प्यारी है।
मर्यादा, करुणा, सुंदरता विनय भी सबसे न्यारी है।

हृदय आधार, सुंदर विचार, जब राम समाते हैं मन में।
छल, द्वेष, दम्भ, विकार सहित, सब मोह भगाते जीवन में।

दयालुता का सरोवर हैं, कई जीवन धन्य किये रघुवर ने।
मानव की भाँति कार्य किए, उस तीन लोक के ईश्वर ने ।

जब भटके वन, खाया न अन्न, कैसी पीड़ाएँ सहीं राम ने ।
वनवास किया, बस जल ही पिया कितनी की पार सीमाएं रामने।

करुणा निधान वो, राम नाम से सत्य निखर के आता है।
आनंद मिलता है वहाँ उसे जो दुनियाँ से बिखर के आता है।

है युद्ध कौशल, हृदय वत्सल फिर भी शांति का आधार दिया।
थे पाप जिसने किए वो रावण, बस एक क्षण में मार दिया।

राष्ट्रवाद

– सोनू गौड़
एलएल.बी. (तृतीय वर्ष)

राष्ट्रवाद का संग्राम, एकता का आदान-प्रदान,
स्वतंत्रता की राहों में, लोकतंत्र की उड़ान |1|

धरती पर खिला विशेष पुष्प, सजता है राष्ट्र का भाग्य,
समर्थन में भारतीयता है, दिखती है समृद्धि की राह||

सबका साथ, सबका विकास, यही है राष्ट्रवाद का सिद्धांत,
राष्ट्रवाद की यही पुकार, अखंड भारत का सपना हो साकार||

राष्ट्रवाद का संग्राम, एकता का आदान-प्रदान,
स्वतंत्रता की राहों में, लोकतंत्र की उड़ान |2|

धरती पर बसा राष्ट्र, भाग्य की संगिनी,
न्याय और स्वतंत्रता, सच्ची विकास की राहें||

सत्य, न्याय, और समर्थन का आदान-प्रदान,
यही तो है राष्ट्र वाद, समृद्धि का है मूलमंत्र ||

संवैधानिकता है साकार, भूमि पर न्याय की बराबरी,
सत्य और धर्म का पुनर्निर्माण, है राष्ट्रवाद की यही कामना||

राष्ट्रवाद का संग्राम, एकता का आदान-प्रदान,
स्वतंत्रता की राहों में, लोकतंत्र की उड़ान |3|

राष्ट्रवाद एकता की प्रेरणा, सरकारों का संवाद,
नागरिकों का मेल-जोल, सबका समर्थन आदान-प्रदान ||

युद्ध नहीं, शांति का मार्ग, यही है राष्ट्रवाद का उद्देश्य,
सुख-समृद्धि का हम करें समर्थन, जिससे उन्नति राष्ट्र करें|

राष्ट्रवाद का संग्राम, एकता का आदान-प्रदान,
स्वतंत्रता की राहों में, लोकतंत्र की उड़ान |4|

विकसित भारत

–लोकेन्द्र सिंह
बी.ए. (द्वितीय वर्ष)

सृष्टि के अद्वितीय खजाने से,
भारत निकला सदियों का भविष्य बनाने ।

नए युग की शुरूआत, नये सपनों से,
विकास की ऊँचाइयों की ओर बढ़ते कदमों में।

नेतृत्व में रूपांतरित हुआ,
विश्वास और साहस से भरा हुआ।

शिक्षा की राहों में बदलती धारा,
ज्ञान के सागर की ओर बढ़ती लहरें।

तकनीकी उन्नति की मिसाल,
हर क्षेत्र में हो रहा बदलाव साकार।

सड़कों पर बढ़ती गति,
विकास की ऊँचाइयों की ओर होता सफर ।

हर कदम पर भ्रष्टाचार का संहार
ईमानदारी और उन्नति की मेहनत से भरा है
इस बार।

जल, वायु और ऊर्जा का सफल प्रबंधन,
प्रकृति से हो रहा है प्यार का प्रतिबंधन ।

विकसित भारत की ऊँचाइयों पर,
बढ़ रहा है देश का गर्व और गौरव

एक सशक्त और समृद्ध भविष्य की कहानी,
लिख रहा है विकसित भारत, की नई कहानी

★ ★ ★

कल बनाम आज

– सोमेश वाधवानी
बी.कॉम. (तृतीय वर्ष)

वास्तव में जीवन एक ऐसा सफर है, जहाँ समय समय पर आपको सीख और अनुभव रूपी स्टॉप (विश्वास स्थल) मिलते रहते हैं। कुछ ऐसा ही अनुभव मैंने भी कल महसूस किया। जहाँ मेरी दादी ने मुझे कॉलेज जाते वक्त 200 रुपये दिए दोस्तों के साथ समय बिताते हुए जब मैं घर पहुँचा तब मेरे पास केवल 10 रुपये का नोट शेष था। आम खर्च मानते हुए मैंने सदैव की तरह इस बार भी यह बात अनदेखी करी, परंतु जब रात में दादी के साथ आगामी महीने का बजट बनाने बैठा तब मेरी नजर दादी के छोटे थैले पर पड़ी जहाँ मेरी दादी हर माह की छोटी मोटी बचत जमा करती थी मेरी दादी ने यह बचत मेरे दादा जी के साथ मिलके करी थी, तब मैंने सुबह का वह किस्सा याद किया। एक ओर जहाँ लाखों रुपये की मैनेजमेंट की पड़ाई करने के बाद भी मैं एक छोटी सी राशि को नहीं बचा सका तो वहीं दूसरी ओर पारिवारिक कारणों से अपनी शिक्षा आधे में ही छोड़ देने वाली मेरी दादी, पूरे माह के गंभीर व्ययों के साथ भी बचत करने में सक्षम रही। परंतु ऐसा क्यों? उत्तर के रूप में मेरा मानस पटल मुझे 2 कारण सुझाता है एक उत्तरदायित्वों की भिन्नता, दूसरा– तजुर्बे की कमी और हो सकता है की यह सत्य भी हो परंतु इसके पीछे सबसे बड़ा कारण समय का है अर्थात 'कल बनाम आज' का है। वर्तमान पीढ़ी अपनी इच्छापूर्ति में इस हद तक मगन हो चुकी है कि उसे आवश्यकताओ और व्यसन्ताओं में भेद करना नहीं आता। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कल बनाम आज की इस व्यथा को उपलब्ध पाया जा सकता है वर्तमान पीढ़ी अपने मूल्यवान संस्कारों तथा शिक्षाओं को अंधेरे में रखके आधुनिक चमक धमक में विलासिता प्राप्त करने तक ही सीमित होती जा रही है। परिवार नियोजन, सामाजिक सुरक्षा, नारी सशक्तिकरण जैसे मुद्दे भी आज कटघरे में पहुच गए हैं। इसके पीछे भी प्रमुख कारण के तौर पर इन्हीं व्यसन कार्यक्रमों को पाया जाता है। कल बनाम आज जैसा तत्व प्रत्येक स्तर पर पाया जा रहा है उदहारण के लिए कई बिन्दुओं को समझा जा सकता है– राजनीतिक नजरिए से देखें तो जहाँ पूर्व मे अटल बिहारी, ए पी जे कलाम साहब, प्रणब मुखर्जी जैसे शिक्षित, परिपक्व चेहरे राजनीति की शोभा बढ़ाते थे वहाँ आज दसवी फेल तथाकथित नेता भी चौराहे पर खड़े होकर किसी धर्म की तुलना डेंगू से कर देते हैं, तो कभी उसके विनाश की सौगंध खाके उसी धर्म के अनुयायी के पास बोट माँगने चले जाते हैं। धार्मिक नजर से भी यह दुख सामने आता है जहाँ कभी धर्म को धारण किया जाता था आज उसी धर्म को दिखावे का साधन मात्र बना दिया गया है एक ओर हमारे पूर्वज जिस धर्म की रक्षा के लिए सर्व बलिदान कर गए दूसरी ओर उन्हीं पूर्वजों के वंशज अर्थात हम धर्म परिवर्तन को मनोरंजन का साधन मात्र समझ बैठे है। सिख, जैन, बौद्ध समाज जो अपने बलिदान अपनी संस्कृति अपने मूल्यों के लिए जाने जाते थे आज उन्हे गुमराह करके मूल से प्रथक करने का कार्य किया जा रहा है। कल तक जो विज्ञान हमारा साधन मात्र था आज वह कृत्रिम बुद्धिमता के रूप मे साध्य बन बैठा है। आयुर्वेद जैसे स्व के भाव से दूर होके ऐलोपेथी जैसे हानिकारक चक्रव्यूह मे फसना भारत वासियों की आदत बन गई है। भारतीय योग परंपरा विश्व भ्रमण करके, योगा रूप में हमारे सामने आ जाती है। पूर्वजों के इतिहास को भूलते हुए इस देश को झेलना आज हमारी फितरत मे आ चुका है। कुल मिलाकर कल बनाम आज मनुष्य को खोखला कर रहा है। यह एक दीमक के समान है, जो मानव को मानवता से, समाज को सामाजिकता से तथा पुरुष को पुरुषार्थ से दूर कर रहा है। यह हमारी चिर पुरातन, नित्य नूतन परम्पराओं को खंडित कर रहा है।

'मैं हिन्दी हूँ'

–शुभी गुर्जर
शोधार्थी, हिन्दी

मैं हिंदी हूँ,
सदियों से बहती सरिता–सी।

भाषा हूँ एकता की,
हिन्दुस्तान की पहचान हूँ।

संस्कृत की मैं पुत्री हूँ,
संस्कृति की धात्री हूँ।

सींचा है मैंने शब्दों से,
एक सम्पूर्ण सभ्यता को।

जिसने भी द्वार पर दस्तक दी,
उसको हृदय से अपनाया।

अरबी, फ़ारसी, अंग्रेजी जो भी आती गयी,
सबको मैं खुद में समाती गयी।

यूँ ही इस मेल मिलापे से,
मैं नित समृद्धता पाती गयी।

मैं हिंदी हूँ देश की भाषा हूँ,
मैं ही जन–जन की आशा हूँ।

जोड़ा है मैंने अपनों को,
साकार किया है, सपनों को।

आओ मेरे प्यारे बच्चों !
दुनिया मैं तुमको दिखलाऊँ

विश्व की समस्त संभावनाओं से,
साक्षात्कार तुम्हारा करवाऊँ।

धन्यम् भारत वर्ष

–श्रजल सिंह राजावत
बी.ए. (तृतीय वर्ष)

धन्यं भारतवर्ष धन्यम् ।
पुण्यं भारतवर्ष पुण्यम् ।।

यस्य संस्कृतिः तोषदायिनी,
पापनाशिनी पुण्यवाहिनी।

यत्र पुण्यदा गंश याति,
सिन्धु–नर्मदा सदा विभाति।

सरस्वती च धन्या – धन्या,
यमुना कृष्णा मान्या मान्या ।

शृणुमो यत्र च वेद पुण्यम् ।।
धन्यं भारतवर्ष धन्यम् ।

पुण्यं भारतवर्ष पुण्यम् ।।
यत्र पर्वताः रम्याः रम्याः,

ऋषयो मुनयो धन्याः धन्याः।
कैलासश्च हिमराजश्च

विन्ध्य–सतपुड़ा हिमाद्रश्च।
पुण्य–पर्वतैः पुण्यं पुण्यम्।।

"स्मरेम निजगौरवम्"

स देशो जीवति यः प्राण पणेनात्मसंस्कृतिं रक्षति
यदि नाम संस्कृतिर्विनष्टा तर्हि तद्र राष्ट्रं निष्प्राण

भवति 'तदैव ऋणिभिः कथितम् अस्ति।'
अभीवर्तेन मणिना रोनेन्द्रो अभिवावृहो

तेनास्मान् ब्रह्मणस्पतेऽभि राष्ट्राश वर्धश
अभिवृत्य सपत्नान अभिया नो अरातयः

अभि पृतन्यन्तं तिष्ठामि शो नो दुर स्यति
भ्रान्ता जना विचारयन्ति यद् भारतीयरा संस्कृतौ अथर्ववेद 6.29

कश्चिदभावो वर्तते यस्माद वगरणात् विदेशवासिना-
मिव अस्माकं प्रगतिर्न भवति । तेषां विभ्रमस्य

निराकरणायैक मेवैतिहासिकतथ्य मुद्घाटनमर्हति
कस्त्रौक कर्म संस्कृति-रक्षण नाम

यथा पुरा तथैवाधुनापि मनीषिणामाचार्याणां
विद्यार्थिजनानां सम्मिलितप्रयत्नेन सर्वोद्योन्मुखी

संस्कृतिः शिक्षा च शाश्वतं संरक्षिष्यते ।
भारतीय मनीषिणः संस्कृतोरादिकालतो विश्व-

मानवतायै स्वीय सर्वस्व वितरण मेव परं पुष्यमामनीतस्य्
संपूर्ण भूमण्डले भारतस्य विकासयात्रा प्रदर्शनार्थे

महा प्रतिष्ठा संवर्धनार्थमच "विकसित भारत" इति
अस्माकं चिन्तनम् भवेत् ।

डॉ. मनीष खेमरिया
प्राध्यापक पूर्व विभागाध्यक्ष

Outstanding Student
Cadet Nidhi Verma

Cadet Nidhi Verma, enrolled in the Unit 3 Naval Unit, has undergone rigorous training and participated in several prestigious camps across India.

Camps Attended:

1. All India Camp - Yachting Regatta (Vishakhapatnam): Cadet Nidhi Verma showcased her sailing skills and competitive spirit at the All India Yachting Regatta held i Vishakhapatnam. Her participation in this event demonstrates her proficiency in maritime activities.
2. All India Camp - INA (ATC) Kerala Lakshadweep: Nidhi Verma further honed her naval skills and knowledge at the prestigious Indian Naval Academy's (INA) Advanced Training Camp (ATC) in Kerala's Lakshadweep region. This camp provided her with advanced training and exposure to diverse naval operations.
3. More Camps-CATC, NSC IGC, NSC Phase 2, RDC IGC BC, RDC 1, RDC 2, RDC 3: Cadet Nidhi Verma's commitment to her naval training is evident from her participation in various additional camps, including the Combined Annual Training Camp (CATC), National Cadet Corps (NCC) Special National Camps (NSC) such as IGC and Phase 2, as well as the rigorous Reserve Duty Camps (RDC) including IGC BC, RDC 1, RDC 2, and RDC 3.

Cadet Nidhi Verma's extensive participation in diverse naval camps demonstrates her unwavering dedication to her naval training and her aspiration for excellence in maritime operations. Her achievements stand as a testament to her hard work, determination, and passion for serving in the naval forces. She is a proud member of MLB Arts and Commerce Government College, where she has excelled both academically and in her naval pursuits. Her participation in various naval camps reflects positively on the college's commitment to fostering leadership and excellence among its students.

-Yogita Chauhan
B.B.A. III Year

The ocean of my heart has turned dark,
No aspiration is left to creat a spark.

Words choak in throat hiding miserable moan,
No soul is left to listen my distressful groan.

Curtain of smile conceals my pain,
still finding the hope which I could gain.

Gloom is everywhere heart is now numb,
My mind is still wondering where i have come

Enormous thunder of loneliness attacking the brain,
My troubled sole wants to start everything again.

It's enough to wear mask of smile
hiding my emotions,

but can't do anything because,
my heart is still surrounded by darkness of it's ocean

-Abhishek Biswas
MA III Sem. English Literature

All Said mess while he said art.
A maddening crowd hurled brittle stones,

Yelled Their, impaled her soul.
All she buffered lying in her agony,

Love was only her so called felony.
Wishing her death, getting worn out,

"Enough" yells a traveller clear and loud.
While the others despised her scars,

Now was an aesthete who saw piece of art.
Love was peril, all remarked that time,

Yet turns to a lover known to his crime.
All went mad while he gazed up upon her scars,

All said mess while he said art...?

नारी का अस्तित्व

– अभिषेक भटनागर
एम.ए. (राजनीतिशास्त्र)

धरती के इस छोर से उस छोर तक
मुट्ठी भर सवाल लिये मैं
छोड़ती -हॉफती-भागती
तलाश रही हूँ सदियों से निंतर
अपनी जमीन, अपना घर
अपने होने का अर्थ।

भारतीय समाज की नारी की स्थिति को बखूबी कयां करती 'निर्मला पुतुल' की ये पंक्तियाँ पूरे समान की व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करती हैं। भले ही आज हम यह कहकर अपनी पीठ थपथपा लें कि आज़ादी के 75 सालों में हमारी महिलाएँ चाँद पर पहुँच गई हैं, फाइटर प्लेन उड़ा रही हैं, व्यवहारिक तौर पर देखों तो यह संख्या महिलाओं की आबादी का अंशमात्र ही है। हमारे समाज की महिलाओं का एक तबका आज भी सामाजिक बंधनों की बेड़ियों को पूरी तरह से तोड़ नहीं पाया है, उनका अपना स्वतेत्र अस्तित्व नहीं है या यूँ कहें कि हमारा पितृसत्तात्मक समाज उन्हें जन्म से ही ऐसे साँचे में टालने लगता है कि वे उपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिये पुरूषों का सहारा ढूँढती हैं। वहीं यह भी सत्य है कि जब–जब कोई स्त्री अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहती है, तब–तब न जाने कितने रीति–रिवाजों, परंपराओं, पौराणिक आख्यानों की दूहाई–देकर उसे गुमनाम जीवन जीने पर विवश कर दिया जाता है। इसलिए यह जानना बेहइ जरूरी है कि तेजी से विकास के पथ पर अग्रसर भारत में शैक्षिक सामाजिक, राजनीति धार्मिक व आर्थिक स्तर पर महिलाओं ने अब तक कितनी दूरी तय की है।

जैसे कि हम वर्तमान में देख रहे हैं कि व्यक्ति सनातन धर्म के प्रति जागरूक होता जा रहा है। सभी ओर भगवा रंग वातावरण में घुलता जा रहा है। व्यक्ति पुन: राम राज्य की स्थापना की आशा कर रहे हैं, इसके लिए कार्यरत हैं। राम राज्य मे जो धार्मिक–सामाजिक एवं राजनीतिक मान्यताएँ ये उन्हें पुन: स्थापित करना चाहते हैं प्रत्येक स्तर पर धर्म, जाति वर्ण, रंग, राष्ट्रीयता जातीयता आदि के आधार पर भेद–भाव खत्म करने की इच्छा प्रकट कर रहे हैं, परन्तु चिन्ता का विषय यह है कि इस सब में महिलाओं की स्थिति में सुधार कब आएगा?

इस सब में महिलाओं की स्थिति में सुधार कब आएगा?

उन महान युगों (त्रेता, सतयुग) में महिलाओं को गरिमा मय स्थान प्राप्त था। उसे देवी सह धार्मिर्णी, अर्द्धांगिनी सहचरी माना जाता था। स्मृतिकाल में भी ''यत्र नयिस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' कहकर उसे सम्मानित स्थान प्रदान किया गया है। धर्मशास्त्र का यह कथन नारी स्वतंत्रता का अपहरण नहीं है, अपितु नारी के निबधि रूप से स्वधर्म पालन कर संकने के लिए बाहा आपत्तियों से उसकी रक्षा हेतु पुरूष समाज पर डाला गया उत्तरदायित्व है। इसलिए धर्मनिष्ठ पुरूष इसे भार न मानकर, धर्मरूष में स्वीकार अपना कल्याणकारी कर्त्तव्य समझता है। पौराणिक युग मे तो नारी वैदिक युग के देवी पद से उतरकर सह धर्मिणी के स्थान पर आ गई थी। धार्मिक अनुष्ठानों और याज्ञिक कर्मों में उसकी स्थिति पुरूष के समान थी । कोई भी धार्मिक कार्य कबना पत्नि के नहीं किया जाता था। श्री रामचन्द्र ने स्वयं अश्वमेघ के समान सीता की हिरण्यमयी प्रतिमा बनाकर यज्ञ किया था।

यद्यपि उस समय भी अरून्धती (महर्षि वरिष्ठ की पत्नि) लोपामुद्रा (महर्षि अगस्त्य की पत्नि) अनुसूया (महर्षिस्त्रि की पत्नि) आदि नारियाँ दैवी रूप की प्रतिष्ठा के अनुरूप थी तद्यापि ये सभी अपने पतियों की महघर्मिणी ही थी। उस समय भी महिलाओं को सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त थे।

मध्यकाल में महिलाओं

समाज में भारतीय महिलाओं की स्थिति में मध्य काल के दौरान और अधिक गिरावट आयी। जब भारत के कुछ समुदायों में सती प्रथा बाल विवाह और विधवा पुनर्विवाह पर रोक, सामाजिक जिंदगी का एक हिस्सा बन गयी थी। भारतीय उप महाद्वीप में मुसलमानों की जीत ने परदा प्रथा को भारतीय समाज में ला दिया। राजस्थान के राजपूतों में जौहर की प्रथा थी। भारत के कुछ हिस्सों में जौहर की प्रथा थी। भारत के कुछ हिस्सों में देवदासियों या मंदिर की महिलाओं को यौन शोषण का शिकार होना पड़ा था। बहु विवाह की प्रथा–हिन्दू क्षेत्रिय शासकों में व्यापक रूप से प्रचलित थी। कोई मुस्लिम परिवारों में महिलाओं को जनना क्षेत्रों तक ही सीमित रखा गया था।

इन परिस्थितियों में राजनीति, सहित्य, शिक्षा और धर्म के क्षेत्रों में सफलता हासिल की। रज़िया सुलतान दिल्ली पर शासन करने वाली एकमात्र महिला बनीं। महारानी दुर्गावती ने सन् 1564 में मुगल सम्राट अकबर के सेनापति आसफ खान से लड़कर अपनी जान गँवाने से पहले पंद्रह वर्षों तक शासन किया था।

A VISIONARY DREAM: VIKSIT BHARAT 2047

Dr. Suresh Sachdeva
Professor of Economics

Viksat Bharat has been formally launched on December 11, 2023 by ourPrime Minister Shri Narendra Modi. It is the Vision of our Prime Minister and the Government of India to make Bharat a developed nation by 2047, the 100th year of its independence. The Vision encompasses diverse facets of development such as economic growth, social progress, environmental sustainability and effective governance, Vision Bharat 2047 is a project initiated by NITI Aayog, the Apex policy think tank of India, to create a blueprint for India's development in the next 25 years. The main aims of this project is to make India a global leader in technology and innovation, a model of human development and social welfare, and a champion of environmental sustainability.

Main Aspects of Developed India

- Structural transformation: This refers to the shift of resources from low-productivity sectors such as agriculture to high-productivity sectors such as manufacturing and services. By doing so, this can boost economic growth, create new jobs and reduce poverty.
- Organizing labour markets: This implies improving the quality and quantity of labour supply enhancing the skills and ensuring fair and efficient labour regulations. This may increase labour productivity, reduce informality and promote social protection.
- Improving financial and social inclusion: This involves expanding the access and affordability of financial services and social welfare schemes for the marginalized groups and poor. This can improve their income, savings, consumption, health and education.
- Increasing competitiveness: This involves enhancing the efficiency and innovation of firms, improving the quality of products and services and expanding the domestic and international markets. This can improve economic dynamism, increase exports and attract investments.
- Governance reforms: This implies strengthening and the institutions and processes of governance such as the rule of law, accountability transparency and participation. This can improve the delivery of the public goods and services, reduce corruption and enhance trust.
- Making Opportunities in Green Revolution: This implies adopting and promoting green technologies and practices such as renewable energy, energy efficiency and climate resilience. This can reduce greenhouse gas emissions, mitigate environment of degradation and create new opportunities for growth and development.

Schemes Operate under Viksit Bharat Sankalp Yatra

- Ayushman Bharat PMJAY
- Pradhan Mantri Garib Kalyan Anna Yojana
- Pradhan Mantri Vishwakarma
- Pradhan Mantri Ujjwala YojanaPradhan Mantri Kisan Samman Nidhi
- Pradhan Mantri Poshan Abhiyan
- Kishan Credit Card (KCC)

Why We Saw A Visionary Dream?

At present, India is at a turning point in its history. India is the fifth largest economy in the world today and will be the world's third largest economy by 2027 as its GDP crosses US$ 5 trillion (IMF estimates). Bharat is poised to be a US$ 30 trillion economy with all the attributes of a viksit nation.

In 21h century, India has been transformed many fronts and is ready for take-off. There has been an expansion in social and economic infrastructure through policies and schemes such as Samagra Shiksha and expansion of Universities IITs, IIMs, Medical and Nursing Colleges. India higher education system today boasts 1113 Universities / University level Institutions, 43796 Colleges and 11296 stand-alone institutions with 4.33 crore students. The Gross Enrolment Ratio (GER) in higher education has increased to 28.4. The GER is the ratio of people enrolled in higher education to the population in the age group of 18-23. Similarly, the healthcare sector has expanded and in 2022, there were 1,56,000 Ayushman Bharat Centers, providing primary health care services to communities. Progress has been seen the on other fronts as well. India has 120 crore mobile phone users and 80 crore internet users. India has 30 crore United Payment Interface (UPI) users with 1000 crore transactions per month, Over 40 percent of all digital transactions are on UPI.

Besides the above, the most important is our demographic dividend. With a population of more than 140 crores, India is one of the youngest nations with a medium age of 29 years. It accounts for about 20 per cent of the World's total young population. This is a great opportunity likely to last till 2047.

How to Reach Viksit Bharat?

The role of the youth, constitute our largest population group has a great role as they will lead Bharat to Viksit Bharat by 2047. Therefore, it is important to channelize the innovative ideas of the youth into nation-building and contribute to the vision of Viksit Bharat by 2047.

अयोध्या में भगवान
श्रीराम जी की प्राण प्रतिष्ठा
17/01/2024 से 22/01/2024
GLOBUS
मूल्यवर्धित पाठ्यक्रम
(30 कालांश)
हिन्दी दिवस
आयोजक : हिन्दी विभाग

सुर्ख़ियों में महाविद्यालय

एमएलबी कॉलेज में 30 घंटे का वैल्यू एडेड कोर्स शुरू

ग्वालियर। शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग में 30 घंटे (15 दिवसीय) वैल्यू एडेड कोर्स सोमवार को शुरू हो गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. राकेश श्रीवा... पुस्तकालय विज्ञान वि... महाविद्यालय मुरार, वि... रूप में महाविद्यालय के ... सचिव प्रो. आरसी गुप्ता ... अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. पुरुषोत्तम गौतम द्वारा की गई। पुस्तकालय विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. नीरजा वर्मा द्वारा ...शालयों में संचार कौशलता के महत्व पर प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ. राकेश श्रीवास्तव ने व्यक्तित्व विकास में संचार की भूमिका को विस्तार से बताया। विशिष्ट अतिथि एवं अकादमिक सचिव प्रो. आरसी गुप्ता ने छात्रों को संप्रेषण कला के बारे में बताया। ... अधिष्ठाता डॉ. संध्या बोहरे, परीक्षा नियंत्रक डॉ. प्रदीप गुप्ता, डॉ. जितेन्द्र श्रीवास्तव, संस्कृत विभाग के प्राध्यापक डॉ. नरोत्तम निर्मल एवं डॉ. अशोक कुमार सहित छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सरिता वर्मा एवं आभार प्रदर्शन डॉ. अरविन्द शर्मा द्वारा किया गया।

विद्यार्थी नौकरी के लिए पाठ्य... लेखन पर ध्यान दें : तिवा...

नगर संवाददाता ■ ग्वालियर

महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग में संचालित किए जा रहे वैल्यू एडेड पाठयक्रम में लेखन कौशल के अंतर्गत नौकरी के लिए आवेदन एवं पाठ्यचर्या, जीवन लेखन विषय पर विगत दिवस ...ला का आयोजन ...जसमें मुख्य वक्ता ...मेटी विवि के प्रो. ... नौकरी के लिए सीवी पर सबसे ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। यह एक संक्षिप्त प्रलेख है जो कि व्यावसायिक अनुभव जैसे शिक्षा, महत्वपूर्ण पुरस्कार, सम्मान एवं अन्य उपलब्धियां को एक ही प्रलेख में संरक्षित करता है। साथ ही तिवारी ने विद्यार्थियों को सीवी के विभिन्न प्रकारों के बारे में भी बताया। जिसमें कालानुक्रम सीवी और कार्यात्मक सीवी में पूर्ण विवरण ..., मोबाइल नम्बर ... जानकारी भरी ...

श्रीराम एक्सप्रेस

व्यवहारिक-आर्थिक ज्ञान से बढ़ता है आत्मविश्...

श्रीराम एक्सप्रेस, ग्वालियर

शासकीय एमएलबी महाविद्यालय ग्वालियर के आंतरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ के अंतर्गत अर्थशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित वैल्यू एडिट कोर्स शीर्षक एवरीडे इकोनॉमिक्स का समापन सत्र महाविद्यालय के अटल बिहारी प्रबंधन सभागार में संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. एके वाजपेई उपस्थित रहे। ...

...ल्यू एडेड कोर्स में व्याख्यान...

...पत्रिका. पुस्तकालय ... विभाग द्वारा आयोजित वैल्यू ... डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म की शि... की आवश्यकता होगी। ... शैक्षणिक प्रणाली और विशेष रूप ... हमारे सीखने के कौशल में डिजि... लर्निंग प्लेटफॉर्म को शामिल करने ... अत्यंत आवश्यकता है। छात्रों ... कार्यस्थल पर उपयोग में आने ... कौशल पर चर्चा करते हुए छात्रों ... आवश्यक फोन स्किल के बा... जानकारी दी एवं छात्रों द्वारा रोल... कर कर फोन स्क्रीन की उपयोगित... समझाया।

एमएलबी में आपदा प्रबन्धन पर कार्यशाला आयोजित

ग्वालियर। महारानी लक्ष्मीबाई स्वशासी महाविद्यालय में एस.डी.ई.आर.एफ. के सहयोग से गुरुवार को आपदा प्रबन्धन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें प्लाटून कमाण्डर गोविंद शर्मा ने अपनी टीम के साथ आपदा प्रबंधन अन्तर्गत प्राकृतिक एवं मानवकृत आपदाओं के सम्बध में महत्वपूर्ण जानकारी ...का भी प्रदर्शन किया। कार्यक्रम ...र्य डॉ. पुरुषोत्तम गौतम द्वारा की ...ा, डॉ. नरोत्तम कुमार, डॉ. नुसरत ...ा बोहरे, डॉ. सुधीर शर्मा, डॉ. ... रवि द्विवेदी सहित अन्य मौजूद

आपदा प्रबं...

ग्वालियर। मध्य प्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग, भोपाल के निर्देशानुसार गत दिवस एम.एल.बी. महाविद्यालय ग्वालियर में एस.डी.ई.आर.एफ. ग्वालियर के सहयोग से आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्लाटून कमांडर गोविन्द शर्मा ने अपनी टीम सदस्यों के साथ प्राकृतिक ...

पद्मा शर्मा को मिलेगा साहित्य सम्मान

ग्वालियर। बीपीए फाउंडेशन एवं इंडिया नेटबुक्स दिल्ली ने साहित्य सम्मान 2023 की घोषणा कर दी है। इसके तहत डॉ. पद्मा शर्मा के उपन्यास 'लोकतंत्र के पहरुए' को साहित्य सम्मान प्रदान किया जाएगा। ख्यात कथाकार ममता कालिया की अध्यक्षता में लिए गए निर्णय की सूची डॉ. संजीव कुमार ने जारी की। उल्लेखनीय है कि डॉ. पद्मा शर्मा एमएलबी कॉलेज ग्वालियर में हिन्दी की प्राध्यापक हैं। पूर्व में भी उन्हें कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। उनके उपन्यास 'लोकतंत्र के पहरुए' को हाल ही में जयपुर अलंकरण से नवाजा गया है। उपन्यास की लोकप्रियता को देखकर प्रकाशक ने उसे हार्डबॉण्ड में निकालने के बाद पेपरबैक में भी प्रकाशित कर दिया है। यह उपन्यास आदिवासी तथा राजनीति की पृष्ठभूमि पर आधारित है।

...ज्ञान विभाग द्वारा ...र्स का उदघाटन

भारत की अर्थव्यवस्था बढ़ाने पर मंथन शुरू

ग्वालियर। द इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया द्वारा 9 व 10 मार्च को कोलकाता में ऑल इंडिया मैनेजिंग कमेटी मेंबर्स मीट का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में सीए प्रोफेशन में पारदर्शिता और स्वतंत्रता का ध्यान रखते हुए सीए प्रोफेशन और भारत की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई। इस दौरान ग्वालियर ब्रांच ऑफ सीआईआरसी की ओर से शाखा अध्यक्ष सीए अजित बंसल, उपाध्यक्ष पंकज शर्मा, सचिव राहुल मित्तल, ट्रेजरर सीए निधि अग्रवाल, सिकासा अध्यक्ष सीए समर्थ दोनेरिया और इमीडिएट पास्ट चेयरमैन सीए सचिन गुप्ता ने कोलकाता पहुंचकर इस कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम में भारत के सभी राज्यों से 1200 से अधिक सीए भाग ले रहे है।

व्यवहारिक आर्थिक ज्ञान से आत्मविश्वास बढ़ता है

शासकीय एमएलबी विद्यालय ग्वालियर के आंतरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ के अंतर्गत अर्थशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित वैल्यू एडिट कोर्स ...क एवरीडे इकोनॉमिक्स का समापन सत्र आज दिनांक 9 मार्च 2024 को महाविद्यालय के अटल बिहारी प्रबंधन सभागार में संपन्न ...

छात्र समय प्रबंधन के लिए अपना लक्ष्य निधारित करें

आमजन ...

सराहनीय भूमिका

व्यवहारिक आर्थिक ज्ञान से बढ़ता है आत्मविश्वास : वाजपेयी

ग्वालियर। शासकीय एमएलबी महाविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ के अंतर्गत अर्थशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित वैल्यू एडिट कोर्स शीर्षक एवरीडे इकोनॉमिक्स का समापन सत्र शनिवार को महाविद्यालय के अटल बिहारी प्रबंधन सभागार में संपन्न हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. एके वाजपेयी एवं विशेष अतिथि के रूप में डॉ. अनीता तिवारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर पुरुषोत्तम गौतम ने की। डॉ. वाजपेयी ने व्यवहारिक आर्थिक ज्ञान से आत्मविश्वास बढ़ाने का मंत्र दिया। डॉ. अनीता तिवारी ने अर्थशास्त्र की उपयोगिता को प्रत्येक विज्ञान तथा व्यक्तित्व के लिए आवश्यक बताया। ...

जयारोग्य में हाई पाव... मशीन का शुभारंभ, ... दर्द से मिलेगी रा...

नारी श...

श्रीराम एक्सप्रेस

विद्यार्थी नौकरी के लिए व पाठ्यचर्या लेखन पर ध्यान दें:डॉ.मनोज

श्रीराम एक्सप्रेस

...एडेड कोर्स का हुआ शुभारंभ

'सफल प्रदर्शन के लिए डिजिटल ल... प्लेटफॉर्म का महत्वपूर्ण योगदान'